श्यामा - चकेवा

श्री राजेश्वर झा

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना

SHYAMA-CHAKEVA

●

प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना

●

पहिल खेप

विद्यापति-स्मृति-दिवस

१८ नवम्बर, १९७२

●

मूल्य : १·२५ (सावा टाका मात्र)

●

मुद्रक :

श्री कामेश्वर प्रसाद

कालिका प्रेस,

पटना—४

प्राक्कथन

समाजशास्त्रक अनुसारें कृषिक आरम्भ स्त्रीक द्वारा भेल। आदिमकाल मे पुरुष जखन आखेट करैत छलाह तँ स्त्रिये घरक कात-करोट मे अन्न उपजबैत छलीह, ओकर रक्षा करैत छलीह तथा ओकर संचय करैत छलीह। फलस्वरूप तंत्र मे जकर सम्बन्ध ओहि युग सँ अछि स्त्रियेक प्रधानता पाओल जाइछ। स्त्रियेक शक्तिक पूजा होइछ तथा ओकरहि सर्वस्वक अधिस्ठात्री देवी मानल जाइछ।

वस्तुतः तंत्रक कतिपय आचार कृषि सँ सम्बद्ध अछि। तंत्रक "वामाचार" स्त्रिये आचार थिक। शाकम्भरी देवीक प्रत्यक्ष सम्बन्ध कृषिये सँ अछि। दुर्गापूजा मे पूर्ण घटक ऊपर फूल, फल रखबाक जे परिपाटी अछि ओकरहु सम्बन्ध कृषिये सँ अछि। षटचक्रवेधसाधना मे चक्र नारीत्वक स्थान थिक किएक तँ प्रत्येक चक्र मे एक-एक त्रिकोण रहैछ जे भगक प्रतीक थिक। देवीयंत्र तथा सर्वतोभद्रमंडलयंत्रहु मे त्रिकोणक स्थापना कएल जाइछ जे भगहिक प्रतीक थिक। लतासाधना मे भग पूजाक विधान अछि। भगपूजा उपजाक वृद्धिक प्रतीक छल जकर ध्वंसावशेष आखन देशक भिन्न-भिन्न भाग मे विविध वर्गक मध्य पाओल जाइछ। सर जेम्स जार्ज फ्रेजर "दी गोल्डेन बोध" नामक अपन ग्रन्थ मे अनावृष्टि भेला पर नग्न स्त्री द्वारा हर जोतबाक तथा बेंग कूटि अपन पड़ोसीक घर मे फेकबाक एक गोट प्रथाक उल्लेख कएलनि अछि। मिथिलांचल मे निम्न जातिक स्त्री मध्य सेहो एहिं प्रथाक प्रचलन अछि। मिथिलाक प्रख्यात जट-जटिनक सम्बन्ध तथा बेंग कूटबाक तात्पर्य पूर्णतः आदि मानवक संस्कृतिक सार एवं प्राचीन परम्पराक अवशिष्ट अंश सँ अछि जकर विकास तांत्रिक पृष्ठभूमि मे भेल।

जौन मार्शलक सम्मति मे मातृदेवी सिन्धुसभ्यताक सभ सँ प्रधान देवी छलीह। मोहेंजोदड़ो एवं हरप्पाक उत्खनन मे माटिक किछु नग्न प्रतिमा उपलब्ध भेल अछि। मार्शल ओहि प्रतिमा कें लक्ष्मी वा उपजाक देवी कहलनि अछि। ऋगवेद मे मातृदेवी कें अदिति, मही, माता आदि नाम उल्लिखित अछि। यजुर्वेदक—"नमो मात्रं पृथिव्ये" वाक्य मे अदिति कें माता पृथ्वी कहल गेल अछि। ऋग्वेद काल मे आर्य मातृदेवीक सकल सृष्टिक बीज-रूप मौलिक ब्रह्माण्ड सत्ताक रूप मे माँनैत छलाह। उपजाक देवीक चित्रण हरप्पा सँ प्राप्त एक मोहर पर स्पष्ट पाओल जाइछ। ओहि मोहर पर अंकित स्त्रीक गर्भ सँ एक गोट वृक्षक उत्पत्ति देखाओल गेल अछि। तांत्रिक वलि मे तेंडुल, पिष्ठक, दुर्वादल एवं धानक संग पशुवलिक विधानक आधारो कृषिये थिक।

मिथिला मे वसंत पंचमी विशेषतः सीरी पंचमीक नाम सँ प्रसिद्ध अछि। सीरीक अर्थ होइछ हरक देवता जकर तात्पर्य हरिवंशक—'सीतायज्ञाश्चकर्षुकः' वाक्यक सीता यज्ञ सँ थिक। एहि अवसर पर हर और हरबाहक पूजा होइछ तथा एहि दिन सँ हर जोतब आरम्भ कएल जाइछ।

कृषि वृत्तिक संग मिथिलाक संस्कृति मे प्राचीन संस्कृतिक आंशिक रूप स्त्री द्वारा अपन आँगन एवं बाड़ी मे वर्षा भेला पर तरकारीक बीया तथा छोट-छोट गाछ कें रोपबाक रूप मे औखन पाओल जाइछ जे अतीतक पथ-रायल पुरातत्वक रूप मे उपलब्ध अछि।

कृषि सँ सम्बन्धित कतिपय पावनि-तिहार अछि। गब लेब तथा कंद-परवाड़क पृथक-पृथक विधान अछि। धान रोपबा सँ लए पाकबा काल धरि कोनो ने कोनो टोना-टापड़ आदि होयतहिँ रहैछ। अन्ने कें तँ लक्ष्मी तथा ओकरे अभाव कें तँ दरिद्रता कहल जाइछ! अन्नक प्राप्तिक अवधिक आगमन आश्विनक ऊपरान्त होइछ। अतएव आश्विन पूर्णिमा कें अर्थात् कोजागराक दिन लक्ष्मीपूजाक द्वारा अन्नक आवाहन कएल जाइछ। कार्त्तिक अमावस्या कें पुनि दिपावली मनाए लक्ष्मी कें अरियाति कें गृह आनल जाइछ। एहि पाव-

निक अवसर पर ऊक फेरैत एक दिशि तँ गृहपति दरिद्रता कें ऊकियबैत अछि और दोसर दिशि दीपमालिका सँ अन्नक स्वागत करैछ और गृहपत्नी मध्य राति मे सूप डँगाए कें कोन-झाड़ मे नुकाएल दरिद्रता कें खेहारैत अछि।

कार्त्तिक-शुक्ल एकादशी कें 'देवउठाओन'क पावनि होइछ एहि दिन शेषशायी भगवान विष्णु कें उठाओल जाइछ। एहि पावनिक सम्बन्ध पूर्णतः कुसियार सँ अछि। एहि मे कुसियारहिक मण्डप बनाओल जाइछ तथा नैवेद्य मे प्रधानतः कुसियारे रहैछ। एहि दिन सँ कुसियार काटब प्रारम्भ होइछ।

कार्त्तिक पूर्णिमा कें श्यामा भसाओल जाइछ जे कार्त्तिक शुक्ल पंचमी सँ प्रारम्भ होइछ। मिथिला मे श्यामा-चकेवाक खेल कें प्रधानतः कुमारि कन्या और नव-विवाहिता नारी वड़ विशिष्ट मानैत अछि।

श्यामा चकेबाक अभिनयक उद्‌भवक प्रसंग पंडित रामचन्द्र झा द्वारा संपादित वर्षकृत्य, प्रथम भाग, पृ० १७८ सँ १८१ धरि सामा पूजा विधि एवं सामाव्रत कथा मे अंकित अछि जकर अन्तक वाक्य एवंक्रमक अछि—"इति श्रीपद्मपुराणे सूतशौनक संवादे सामापूजाव्रतकथा समाप्ता। इति कार्तिक कृत्यम्।" एहि मे कहल गेल अछि जे सामा श्रीकृष्णक कान्या तथा साम्बक बहिन छलीह। हुनकर माताक नाम जाम्बती छलनि। सामा रात्रि मे चुपचाप चारुवक्य मुनिक ओतए जाइत छलीह। एक राति चुगला नामक एक गोटे हुनका देखि श्रीकृष्ण कें कहि देल। कृष्ण सामा कें साप देलथिन जे तों पृथ्वी पर वन मे चकवी पक्षीक रूप मे रहह। सामाक वियोग मे चारुवक्य अत्यन्त व्यथित भए महादेवक अराधना कएलनि तथा हुनका सँ चकबा हेबाक बरदान प्राप्त कए ओहो अपन पत्नीक संग बृन्दावन मे रहए लगलाह।

सामाक भाय साम्ब कें अपन बहिन-बहिनोयक अहोदशा पर बड़ व्यथा भेलनि। अतएव ओ विष्णुक पूजा करए लगलाह तथा विष्णु सँ वरदान मे अपन बहिन-बहिनोयक पूर्वक कलेबरक याचना कएलनि। विष्ण कातिक मासक पंचमी तिथि कें सामा, चुगला, सप्तऋषि तथा वृन्दावनक मूर्त्ति बनाए चुगलाक मुँह कें झड़केबाक तथा पूर्णिमा तिथि कें विधान पूर्वक सामाक

पूजा कए विसर्जन करबाक आदेश देल। फलस्वरूप सामा और चकेबा अपन पूर्व कलेबर कें प्राप्त कएलनि।

उपर्युक्त कथा एहि रूपें आनन्दाश्रम मुद्रणालय द्वारा प्रकाशित पद्मपुराण मे नहि पाओल जाइछ। एकर अतिरिक्त डा० श्री लोकनाथ मिश्र—"मैथिली मे व्यवहार गीत," परिशिष्ट भाग ३ मे एहि कथा कें स्कन्दपुराणक मानैत दुई गोट औरो कथाकें उद्धृत कएलनि अछि।

उर्युपक्त कथाक आधार जनश्रुति थिक वा पौराणिक यद्यपि ई कहब कठिन थिक तथापि कृष्णक पुत्रीक नाम श्यामा वा सामाक अपेक्षा साम्बा छल। एकर अतिरिक्त बृन्दावन मे आगि लागब, ब्रनतीतर, झाँझी कुकुर, खँड़रिय आदिक कोन तात्पर्य भए सकैछ ?

उपर्युक्त प्रसंग मे रामइकबाल सिंह 'राकेश', मैथिली लोकगीतक भूमिका मे स्वर्गीय डा० अमरनाथ झा जी पृष्ठ ७ मे लिखने छथि जे "श्यामा चकेबा के सम्बन्ध मे पाठकों को जानकर उत्सुकता होगी कि इसका उल्लेख 'पद्म-पुराण' में है।"

यद्यपि अमरनाथबाबू एहि पर बिनु प्रकाश देनहि छोड़ि देलनि तथापि हुनकर कहबाक तात्पर्य प्रायः आनन्दाश्रम मुद्रणालयक पद्मपुराणक दोसर भागक एगारहम अध्याय मे वर्णित श्यामबालाक आख्यान सँ थीक जे एवं-क्रम अछि :—

द्वापर युग मे सौराष्ट्र देश मे भद्रश्रवा नामक राजा छलाह। हुनका सुरतिचन्द्रिका नामक स्त्री सँ सात गोट पुत्र तथा श्यामबाला नामक एक गोट कन्या भेलनि। एक दिन श्यामबाला स्वर्णसिकता सन माटिक धुरा सँ अपन सखीक संग खेलाइत छलीह। ओहि अभ्यन्तर लक्ष्मी वृद्धाब्राह्मणीक रूप धरि राजाक ओतए अएलीह। हुनका देखि दौवारिकी पुछल जे ओ के थिकीह तथा कोन प्रयोजने ओतए अएलीह अछि ? बृद्धा ब्राह्मणीक रूप मे लक्ष्मी कहल-थिन जे हुतकर नाम कमला, पतिक नाम भुवनेश तथा द्वारवतीपुरीक निवासिनी

थिकीह । हुनकर अएवाक कारण थिक जे ओ वैश्यकुलजा रानी पूर्वजन्म मे एक समय अपन पति सँ कलह कयलक तथा पति ओकरा बड़ सतौलकैक । अतएव ओ व्यथाक भार सँ क्रन्दन करैत छलीह । हुनकर क्रन्दन कें सुनि ओ ओकरा समीप जाय सभ वृत्तान्त कें पुछि एक गोट व्रत करवाक उपदेश देल-थिन । ओ ओहि व्रत कें कएलक फलस्वरूप ओ सभ सुख कें उपभोगि अन्त मे अपन पतिक संग लक्ष्मीपुर कें गेलीह । जावत कालधरि ओ ओहि व्रत कें कएलनि तावतकालधरि धन-धान्य सँ पूर्ण भए नाना प्रकारक सुख उपभोग कएलनि किन्तु आव ओ राज-सम्पत्तिक गर्व मे उन्मत्त भए कें ओहि व्रत कें विसरि गेलीह । अतएव ओ ओहि व्रत कें पुनः हुनका स्मरण करेबाक हेतु ओतए अएलीह अछि ।

ओहि ब्राह्मणीक मुँह सँ एहि तरहें सुनि ओ दौवारिकी विज्ञप्ति कएलक जे ओ कोन व्रत थिक, कहिया कएल जाइछ और करबाक कोन विधान छैक ?

दौवारिकीक एहि जिज्ञासाक उत्तर दैत ओ वृद्धाब्राह्मणी लक्ष्मी नारायणक पूजा, ओहि व्रतक विधान तथा कार्तिकक अन्त मे करबाक उपदेश देलथिन ।

ओहि व्रत कें सुनि ओ दौवारिकी रानीक ओतए जाय सम्पूर्ण वृत्तान्त कें सुनौलक । रानी धनक मद मे उन्मत्त भेला सन्ता वृद्धाब्राह्मणीक समीप आबि अत्यन्त गर्व मे तिरस्कारपूर्ण वाणी मे पुछल जे ओ कोन व्रतक उपदेश देबाक हेतु अएलीह अछि ?

रानीक तिरस्कार एवं गर्वोक्तिकें सुनि ब्राह्मणी बजलीह जे ओकर कुविचार और कुनीतिक कारणे ओतए सँ लक्ष्मी जाए रहलीह अछि । अतएव आब ओ ओहि दुर्लभ व्रत कें कोना कहतीह ? ब्राह्मणीक एहि कथा कें सुनि रानी क्रोधें उन्मत्त भए ओहि ब्राह्मणी कें मारए लगलीह । ओ ब्राह्मणी कनैत ओतए सँ पड़ैलीह ।

ब्राह्मणीक कानव कें सुनि श्यामवाला जे खेलाइत छलीह ओतए आबि ओकरा सँ सभ वृत्तान्त कें बुझि श्रद्धा ओर भक्ति सँ तीन बेर तँ ओहि व्रत कें कएलक और जावत चारिम वेर ओ व्रत अएलैक तावत लक्ष्मीक प्रसादे राजा सिद्धेश्वर देवक पुत्र मालाधरक संग ओकर विवाह भए गेलैक तथा ओ अपन सासुर चलि अएलीह।

श्यामवाला कें गेलाक उपरान्त ओकर बाप-मायक सभटा धन बिला गेलैक तथा ओलोकनि अन्न-वस्त्र सँ हीन भए गेलाह। अन्त मे श्यामवालाक पिता अपन बेटीक ओतए किछु याचनाक हेतु नदीक तट मालाधरक गाम गेलाह। श्यामवाला हुनकर समुचित सेवा-सत्कार कएलक तथा जेबा काल एक गोट पात्र मे गुप्त धन दए कें हुनका विदाह कएल। जखन ओ अपन गृह अएलाह तथा ओहि पात्रक धन कें देखल तँ धनक बदला मे छाउर देखलनि। तदुपरान्त श्यामवालाक माय अपन पुत्रीक गृह अएलीह। ओ ओकरहु समुचित आदर-सत्कार कएलक।

एहि अभ्यन्तर लक्ष्मीपूजाक दिन आयल। श्यामवाला अपन माय कें लक्ष्मीपूजा करवौलक। प्रथम तीन राति तँ ओ शावकक उच्छिष्ठ भोजन कें खाए लेलक किन्तु चारिम राति श्यामवाला दृढ़ भए कें लक्ष्मीपूजा ओकरा सँ करौलक। जखन ओ अपन गृह अयलीह तँ पुनः दिव्य गृह धन-धान्य सँ पूर्ण देखल।

एकवेर श्यामवाला अपन पिताक गृह आयल। ओकरा देखितहि ओकर माय क्रोधें आगि भए उठलीह तथा ओकर मुहो धरि तक नहि देखलक किएक तँ बलजोरी ओ ओकरा सँ लक्ष्मीपूजा करवौने छलीह। श्यामवाला पिता-गृह सँ एक ढेप सैन्धव नोन लए अनलक। अपन गृह अएला पर ओकर स्वामी जखन पुछलथिन जे नैहर सँ की सभ सनेश अनलहुँ तँ ओहि नोन कें सभ वस्तुक सार कहि अपन पति कें उत्तर देलथिन।

मिथिलाक श्यामा-चकेवाक अभिनयक सम्बन्ध वस्तुतः उपर्युक्ते आख्यान सँ अछि। श्यामा स्त्री थिकीह और चकेवा पुरुष। एकर अतिरिक्त चुगलाक

सम्बन्ध श्यामवालाक विरुद्ध मे ओकर पिता और माय सँ कहनिहार कोनो दुष्ट सँ अछि। सतभैयाँ श्यामवालाक सातो भाय थिकाह। झाँझी कुकुरक तात्पर्य ओहि दौवारिकी सँ अछि जकरा श्यामवालाक पिताक गृह पर वृद्धा ब्राह्मणी सँ वार्त्ता भेल छल। खड़रिच शब्द जे खञ्जनक पर्याय थिक तथा वन-तीतीरक सम्बन्ध ओहि शावकगण सँ थिक जकर ऐंठ सुरतिचन्द्रिका तीन रातिधरि खएने छलीह। वृन्दावनक सम्बन्ध स्वतः श्यामवालाक पिताक गृह सँ अछि जे लक्ष्मीक क्रोधानिल मे जड़ि कें राख भए गेल तथा एक गोट प्रात्र जे रहैछ तकर सम्बन्ध अहि पात्र सँ अछि जकरा श्यामवाला अपन पिताकें देने चलीह। एकर अतिरिक्त ढोलिया तथा पिपहीवालाक सम्बन्ध एहि अभिनय कें मनोरञ्जक बनेवाक हेतु पाछाँ जोड़ल गेल अछि।

मैथिल ललना औखन प्रत्येक वर्ष सौराष्ट्रक ओहि ललनाक जे मातृकुल ओ पतिकुल दुहू कें उजागर कएलनि प्रतीक रूप मे श्यामा-चकेवाक अभिनयक माध्यम सँ स्मरण करैत अछि।

मिथिला और सौराष्ट्रक संस्कृतिक आदान-प्रदानक पुष्टि आनो-आन ऐतिहासिक कड़ी सँ होइछ। श्यामा-चकेवाक अभिनयक परिपाटी केवल मिथिलाक ब्राह्मण, कायस्थ तथा एहि दुनु वर्ग सँ सम्बद्ध अन्य वर्गेटा मे पाओल जाइछ जे एकर सर्वव्यापकताक अभावक द्योतक थिक।

श्यामा-चकेवाक गीत मे वर्णित तथ्यक विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे एहि अभिनयक सम्बन्ध आश्विन-कार्तिक मास मे रोपवाक आलू, कोबी, मटर, मूर, साग, भाटा, जओ, गहूँम, बदाम आदि अन्न से अछि।

श्यामा-चकेवाक अभिनयक माँटिक पात्र सभ कें चँगेरा मे राखि कन्या लोकनि दीप जराए अपन-अपन माँथ पर राखि कोनो खेत मे रखैत अछि। जकर तात्पर्य उपजाक वृद्धि सँ थिक।

श्यामा-चकेवाक अभिनय कार्तिक शुक्ल पंचमी सँ प्रारम्भ भए कार्तिक-पूर्णिमा कें समाप्त होइछ। ओहि तिथि कें जोतल खेत मे श्यामा कें नवका चूड़ा, दही, गुड़ आदि सँ भोजन करा कें विसर्जन करैत अछि।

वस्तुतः श्यामा-चकेवाक सम्बन्ध भाय-बहिनिक व्यापक प्रेमक परिणाम स्वरूप थिक। बहिन अपन भायक धनक अभ्युदयक कामना एवं ओकरा गृह मे धन-धान्यक कल्पना केँ साकार करैत लक्ष्मीक आवाहन करैत अछि।

विद्यापति-स्मृति-दिवस,
१८ नवम्बर, १९७२

राजेश्वर झा

श्यामा-चकेवा

श्यामा-चकेवाक अभिनय मे दू प्रकारक गीतक समावेश अछि—(१) झुम्मरि और (२) श्यामाक गीत। आरम्भक गीत झुम्मरिक गीत थिक।

झुम्मरि अपन माधुर्य्यक मिठास सँ जन-मानस कें हिलकोरैत अंग-प्रत्यंग मे एक अपूर्व सिहरण कें उत्पन्न करैत अछि। झुम्मरि कें—(१) संदेशात्मक और (२) भावात्मक दुई गोट भेद अछि।

संदेशात्मक झुम्मरिक गीत मे प्रोषितपतिका नायिका भम्मरा, कौआ, कोयली आदि पक्षीक द्वारा प्रवासी साजन कें अपन संदेश पठवैत अछि। श्यामा-चकेवाक संदेशात्मक झुम्मरिक गीतक सम्बन्ध एहि सँ भिन्न अछि। एहि गीत मे बहिनि अपन भाय कें संदेश पठवैत अछि।

श्यामा-चकेवाक झुम्मरिक अधिकांश गीतक सम्बन्ध भावात्मक झुम्मरि सँ अछि जकरा मे सहानुभूति और आनन्दक समिश्रण अछि।

प्रेम नारी हृदयक कोमल भावनाक रूपान्तरण थिक जकर सुखक अनुभूतिक अथाह आकुलताक वर्णन एहि गीत मे उपलब्ध अछि। आलरि, झालरि, झिलमिल केचुआ तथा कामी सिन्दुरक सम्बन्ध ओहि अनन्य प्रणयक आलौकिक प्रेम सँ अछि जकरा नारी स्नेह-जीवनक ज्योति एवं वरदान तँ बुझितहिँ अछि संगहि गम्भीर, स्थायी तथा अंतरंग सुख मानैत अछि।

वस्तुतः एही गीत मे भावानुभावमयी अभिव्यक्तिक रूप मे कुमारिकन्याक वैवाहिक प्रेमक गम्भीरता और पवित्रताक श्रेष्ठतम अंकन अछि जकर पूर्त्ति प्रधानतः निस्वार्थ भ्रातृप्रेम पर निर्भर पाओल जाइछ।

ऋग्वेद मे भायक हेतु भ्रातर शब्द तथा बहिनक हेतु स्वसर शब्द पाओल जाइछ। भ्रातर शब्दक व्युत्पत्ति तथा ऋग्वेदक मंत्र कें साक्ष्य सँ एहि

विषयक प्रमाणक पुष्टि होइछ जे पिता एवं आन-आन सम्बन्धीक अपेक्षा माय कें बहिनिक प्रति उत्तरदायित्व अधिक अछि। पिताक अपेक्षा मायक कर्त्तव्य बहिनिक रक्षण, पोषण तथा बहिनिक हेतु उपयुक्त वरक जोगार करब अधिक होइत अछि।

स्वसर शब्दक अर्थ अत्यधिक निर्भर रहएवाली होइछ जे मायक द्वारा अपरिमित स्नेह प्राप्त करवाक कारणे पहिने सौभाग्यशालिनी और पाछाँ भगिनी नाम अभिहित भेलीह जकरा सँ आधुनिक मैथिलीक बहिनि शब्द बनल। अतएव भायक प्रति एहि तरहक उक्ति एहि गीत मे अछि :—

कओन भैया लओता आलरि-झालरि
कओन भैया लओता पटोर।
कओन भैमा लओता झिलिमिल केचुआ
कओने भैया कामी सिन्दूर।
फलाँ भैया लओता आलरि-झालरि
फलाँ भैया लओता पटोर।
फलाँ भैया लओता झिलिमिल केचुआ
फलाँ भैया लओता कामी सिन्दूर।
कओने बहिनो पहिरतीह आलरि-झालरि
कओने बहिनो पहिरतीह पटोर।
कओने वहिनो पहिरतीह झिलिमिल केचुआ
कओने बहिनो कामो सिन्दूर।
फलीँ बहिनो पहिरतीह आलरि-झालरि
फलीँ बहिनो पहिरतोह पटोर।
फलीँ बहिनो पहिरतीह झिलिमिलि केचुआ
फलीँ बहिनो कामी सिन्दूर॥

माय-बहिनिक उमड़ल स्नेह, भाउज और ननदिक पारस्परिक स्नेहक आदान-प्रदानक सौहार्द्य सँ लबालब निम्नलिखित गीत कतेक मार्मिक अछि—

कओन भैया केर इहो छनि फुलवरिया हे
कि कओने बहिनो लोढ़य चमेली फूल हे
फूलवा लोढ़ैत बहिनि मोरा घामल हे
कि घामि रे गेलै नयन कजरबा हे
छतबा नेने दौड़ल आवथि से बड़का भैया हे
कि बैसू हे बहिनि एतय अछि छाहरि हे
पनिया नेने दौड़ल आवथि एतय भौजो हे
कि पीबू हे ननदो एतए अछि सीतल पानी हे
कनिया भौजो केर केसिया चवर डोलै हे
कि ओहि हे केसिया गूंथब चमेली फूल हे

निम्नलिखित गीत मे सेहो भाय-बहिनिक स्नेहक संग भाउजक प्रति ननदिक अपार एवं स्निग्ध प्रेमक दिगदर्शन होइछ—

कओन फूल फूलल अछि अधि रतिया
कओने फूल फूलल भिनसरबा हे
बेली फूल फूलल अछि अधि रतिया
चमेली फूल फूलल भिनसरवा हे
बेली फूल बान्हबन्हि हम फलाँ भैया के पगिया
की गमकति जैताह दरवार हे
चमेली फूल बान्हबन्हि हम ऐहव भौजो के जूड़ा
की गमकति जैतीह भैया को पास हे

एहि गीत मे बहिनिक द्वारा भाय और भाउजक प्रति मंगल कामनाक संकेतक उपलब्धि होइछ—

सिरी रे जनकपुर सँ आवि गेल भमरा
लागि गेल पनमा केर दूकान
सेहो पात खैताह भैया से फलाँ भैया
रंगि जैतनि बत्तीसो दाँत

सिरी रे जनकपुर सँ आबिगेल भमरः
लागि गेल सिन्दूर केर दुकान
सेहो सिन्दूर पहिरतीह भौजो से ऐहब भौजो
जुगे जुगे बढ़नि अहिबात

श्यामा और चकेवाक खेलक तात्पर्य थिक बहिनिक द्वारा अपन भायक अभ्युदयक कामना। भाय-बहिनिक विशुद्ध प्रेम मे बाधक चुगला अपन कलुषित मनोवृत्तिक कारणे कुठाराघात कएलक। सम्भवतः जखन श्यामवाला अपन माय-बापक इच्छाक विरुद्ध लक्ष्मीक पूजा करैत छलीह तँ किओ पिषुन व्यक्ति प्रायः ओकर चुगली ओकर माय-बाप तथा भाय सँ करैत छल। अतएव चुगलाक आँगन मे धुथुरक गाछक कल्पना एहि गीत मे कएल गेल अछि—

किनका अंगना चानन केर गछिया
किनका आँगन अनार
किनका अंगना धूथूर केर गछिया
आबे चुगला जतिया विटार
बाबा अंगना चानन केर गछिया
भैया अंगना अनार
चुगला अंगना धूथूर केर गछिया
आबै चुगला जतिया विटार

वस्तुतः भाय-बहिनिक पारस्परिक मिलन मे जे यथार्थ सत्यक निरूपण रहैछ ओकरे आभास एहि गीत मे सम्मिलित अछि—

चानन विरिछ तर ठाढ़ भेलीह
बहिनो से फलीँ बहिनो
ताकथि बहिनो भाइ के बटिया
एहि बाटे अओताह भैया से फलाँ भैया
देखि लेबन्हि भरि अँखिया

बाँहिया पसारि जुनि कनहक हे फलों बहिनो
फाटत बहिनो भाइ के छतिया

नारीक वाह्य एवं आन्तरिक सौन्दर्यक संग अनुराग और प्रतिकारक भावनाक ज्वलन्त प्रमाण एहि गीत मे उपलब्ध तँ होयतँहि अछि संगहि एहि मे ननदि-भाउजक हास-परिहासक उल्लसित एवं अनुरंजित नारी रूपक दिग्दर्शनक अतिरिक्त बहिनिक प्रति मायक कर्त्तव्यक भावना कें सचेत करबाक प्रयासक प्रसंग मे उल्लिखित अछि—

गे माय अरही बन सँ खरही कटाओल
वृन्दावन विट बाँस
गे माय ओहि विट बाँस लय बंगला छराओल
चारु दिशि खिड़की कटाओल
ओहि बंगला सूतला भैया से फलाँ भैया
झिहिरि झिहिरि बहय बसात
उठबै गेलखिन ननदो से फलों ननदो
उठू भौजो भए गेल परात
एहेन दोचारिन ननदो कतहु ने देखल
आधे राति कहथि परात हे

जल ओ तरंगे सन नर ओ नारीक सम्बन्ध अछि जकरा मे नाममात्रेक हेतु भेद रहैछ ! उद्वेलित होइत जले कें तँ तरंग कहल जाइछ खाहे ओ उतारक स्थिति मे वा चढ़ावक स्थिति मे रहौक। निम्नलिखित गीत मे एहि तरहक भावना उपलब्ध अछि जकर सम्बन्ध पूर्ण जीवन सँ थिक। 'पोखरि' और 'चम्पाफूल'क तात्पर्य नारीक यौवनमय प्रेम पूरित हृदय सँ अछि जे जीवन तरंग कें तेना ने उद्वेलित करैछ जे ओ अपन भावी जीवनक कल्पनो धरि नहि कए सकैछ—

गाम के अधिकारी तोहें मँझला भैया हौ,
भैया गोठ चढ़ि पोखरि खुनाय दीह हौ,
चम्पा फूल लगाय दीह हौ।

कथी बझाएब वन तितिर हे
आहे कथी बझाएब राज हंस चकेवा
जाले बझाएब बहिनि तितर हे
आहे रौब से बझाएब राज हंस चकेवा
खेल करु हे बहिनि खेल करु हे।
भैया झखायल फूल बहिनि हार गाँथू हे
आहे सेहो हार पहिरथिन भौजो
बहिनि खेल करु हे।

निम्नलिखित गीत मे सेहो शृंगारात्मक भावनाक समावेश पाओल जाइछ जकर प्राबल्य दिन-प्रतिदिनक जीवन मे अछि—

कवन भैया इहो कुस काटल हे,
कुम्हार लगाओल भरहेरिया हे।
ऊपर डगमग नीचे लबि सेजिया हे
ओहि पैसि सूतै गेलाह बड़का भैया हे।
उठू-उठू भैया भए गेल भोर हे,
एहन ननद दो चारिणी हे।
आधी राति कहय भिनसरि हे।

नारी सौन्दर्य मे तँ वास्तविक महानता रहैछ ! एहि वास्तविक रूप मे यद्यपि चंचलताक आभास पाओल जाइछ किन्तु एहि रूपक दर्शन मात्रे सँ नश्वर जगत मंगलमय बनि जाइछ जे नारीक सहोदरा रूप थिक। एहि गीत मे नारीक ओहि रूपक आभास उपलब्ध अछि जकर सम्बन्ध पूर्ण जीवन सँ थिक। जीवनक दौड़ मे सखिकेँ अगुआयला सँ स्वाभाविक क्षोभक उत्पन्न तथा भाय द्वारा ओकरा निराकरणक आश्वसनक मार्मिक वर्णन अछि :—

आट छेविये पाट बान्हल हे चानन रगड़ि कैलौंह ठाँह
कि बड़का भैया पाहुन हे

साठि कुटिकें भात रान्हल आहे मुंगिया दरि कैलौंह दालि
से फलाँ भैया पाहुन हे
खाय लय बैसलाह बड़का भैया
आहे फलीं बहिनो बेनिया डोलाय
कि भैया मोरा पाहुन हे
जल्दी खाउ बड़का भैया हौ
भैया सब सखि गेल अगुआय
हम पछुआय लौंह हे
जुनि कानू जुनि खीजू फलीं बहिनो हे
बहिनो एहन डोलिया अनायब
बहिनि अगुआयब हे।

वैदिक युग मे जे कामना कएल जाइत छल जे नववधू सासु-ससुरक सुखकारिणी बनथु ओ कालेक्रमें स्वतः उत्पीड़ित भए गेलीह।

भारतीय समाज मे स्त्रीक प्रधान कार्य पाक और पुरुषक परिपाक अछि। एहि प्रसंग मे एक गोट गुजराती लोकोक्ति—"खाटला थी पाटला, पाटला थी खाटला" अर्थात् पुरुषक जीवन खाट सँ उठि भोजनक पिढ़ी पर और पिढ़ी सँ उठि खाट पर जेवा टा लए अछि कतेक मार्मिक अछि। विशेषतः संयुक्त परिवार मे सासु-ससुरक द्वारा पुतहु प्रायः उत्पीड़ित होइत अछि जकर वेदना कें ओ नीर-निधिक नीरवतासन गुप्त और मूक रखैत अछि।

निम्नलिखित गीतक सम्बन्ध नारीक पिताक गृहक सुख, सासु-ससुरक कठोर याचना तथा पतिक राज मे "काटबै चरखा गे सजनी" सँ तात्पर्य दाम्पत्य प्रेमक अपेक्षा संयुक्त परिवार मे यन्त्रवत् कार्य करबा सँ अछि जकरा ओ मात्र अपन भायेटा सँ कहैछ जे ओ एहि दुःख कें अपनहि मोटरी मे बांधि कें राखताह अन्यथा जतए कतहु ओकरा ओ खोलताह ततए ओ एक बूँद नोर घरि अवश्ये बहाए देताह। वस्तुतः एहि सँ अधिक मर्मभेदी चित्रण और की भए सकैछ :—

किनकर हरिअर हरिअर डिभवा गे सजनी
कौन बहिनो केर चरई छानि चकेवा गे सजनी
फलाँ भैया के हरिहर हरिहर डिभवा गे सजनी
फलीँ बहिनो के चरैइ छनि चकेवा गे सजनी
किनकर राज - महाराज गे सजनी
किनकर राजे खेलबै झूमरि गे सजनी
किनकर राज दुखराज गे सजनी
किनकर राज काटबै चरखा गे सजनी
बाबाक राज महाराज गे सजनी
भइया राज खेलबै झूमरि गे सजनी
ससुरक राज दुखराजे गे सजनी
स्वामी राज काटबै चरखा गे सजनी

निम्नलिखित गीत मे बहिनिक निस्वार्थ भावनाक एक विलक्षण झलकी तँ पाओल जाइछ किन्तु जीवन-संगीक हेतु जे उदात्त लालसा अछि ओ नितान्त महत्वपूर्ण अछि :—

हमरो से कोन भइया चतुरि सियान हे
बमे लेलनि कगजा दहिने खतियान हे
अपना लेल लिखिह भइया अन-धन-लक्ष्मी हे
हमरा लेल लिखिह भइया सामा-जोड़-चकेवा हे
हमरो से कोन भइया चतुरि सियान हे
बमे लेलनि कगजा दहिने खतियान हे
अपना लेल लिखिह भइया चढ़ै के घोड़बा
हमरा लेल लिखिह भइया हंसा जोड़ि-चकेवा हे।

बहिनिक द्वारा भाय सँ श्यामा चकेवा खेलबाक प्रसंगक निवेदन निम्न-लिखित गीत मे उपलब्ध तँ अछिये संगहि दशो दिशा केँ धाँगि, चम्पाफूल केँ



आँकुस सँ दग्ध होइछ ।
तन पुकार बनि जाइछ

लगेबाक, मायक द्वारा फूल लोढ़बाक तथा माउजक द्वारा अपना हेतु हार गाँथबाक आग्रहक भावना कतेक मनोरंजक अछि—

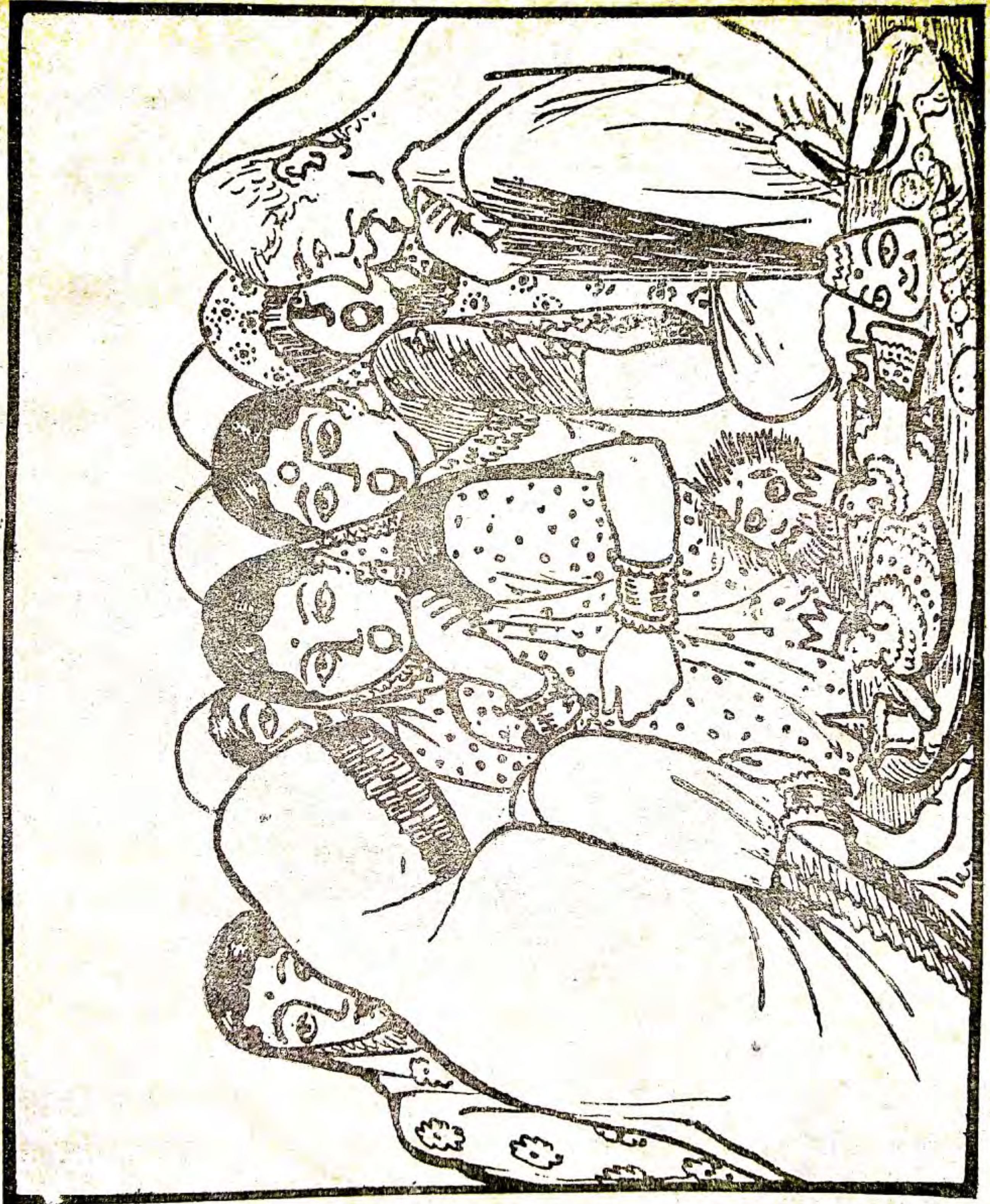
गाम के अधिकारी तोहें फलाँ भैया हे
भैया हाथ दस पोखरि खुना दय चम्पाफूल लगादय हे
भैया लोढ़ायल भौजो हार गाँथू हें
आहे सेहो हार पहिरथि फली बहिनि सामा चकेबा खेल करु हें

भाय-बाहिनिक नैसर्गिक सम्बन्धक चर्चा एहि गीत मे सन्निहित आछि—

राज ककरा वाड़ी उपजल जीर रे जमाइन
राज ककरा कोखि जन्म लेल सोन सन के भाय
राज कोइरी बाड़ी उपजल जीर रे जमाइन
राज अम्मा कोखि जन्म लेल सोन सन हे भाय।
राज फलाँ भैया भाई छथि फलाँ-भैया भाय
फलाँ भैया हितबन्धु डोलिया लागल जाय।

रणाक तीव्र अनुभूतिये तँ ज्ञान थिक। विविध भावनाक तरंग मे ष्य अपन हृदय कें फोलैत अछि। सुख-दुख, आशा-निराशा, क, उत्साह, भय आदि मे जखन कहुखन मनुष्य भावातिरेक मे ्वल भए जाइछ तँ वास्तविकताक यथार्थ परिचय प्राप्त होइछ। ीत मे एहने भावना सन्निहित आछि :—

ीरे फलाँ भैया खेलथि सिकार
हे फली बहिनो के समाद
पाहुन
रब चाउर नहि पनबसनापान
इ से फलाँ भैया केर मान
मंगाएब तमोलिन घर गुआ पान
ाइ हे फलाँ भैया केर मान।



आनुभाविक वृद्धिक आकुल चेष्टा सामाजिक आँकुस सँ दग्ध होइछ ।
यौवन जे सौन्दर्यक पूर्ण विकास थिक आत्माक चिरंतन पुकार बनि जाइछ

तथा ओ पतिहीना नारीक हेतु अभिशाप होइछ। निम्नलिखित गीत मे नारीक एहि रूपक दिग्दर्शन होइछ। बहिनिक प्रति भायक साधारणतः अवलम्बन तँ रहितहि अछि किन्तु नारीक त्यागक भावना तथा पिताक सम्पत्ति मे अपन भातीजक अधिकार एवं मात्र मोटरीक आशा पर संतोषक भावना मे आसक्तिक विरोध तथा विरक्तिक भावना सँ भोगक विशिष्ट विचारक अभिव्यक्ति 'सिन्दुर केर हे आस' सँ आँकल गेल अछि—

पनमा जे खयलह हौ भैया
पिकिया नेरौलौंह एहिठाम
ओहि पिरकी सँ ऐलै हौ भैया
गंगा जमुनवा केर बाढ़ि
एहि पार बहिनि से फलौं बहिनि
करुनमा केने हे ठाढ़ि
ओहि पार भैया से फलाँ भैया
छतवा नेने हे ठाढ़
जुनि कानू जुनि खीझू हे बहिनि
बाबा के सम्पतिया देबह हे बाँटि
बाबा के सम्पतिया हौ भैया
भतीजवा केर हे आस
हम दूर देसिन हौ भैया
मोटरिया केर हे आस
हम परदेसिन हौ भैया
सिन्दूरबा केर हे आस।

निम्नलिखित गीत मे नारी जीवनक कटुसत्यक समावेश अछि। सासुर जाइत बहिनिक प्रति भायक उद्धात कर्त्तव्यक भावना केँ भाउज साधारणतः सीमित तँ करितहिँ अछि संगहि कोना भाय सँ ओ विगाड़ि कए दैत अछि और स्वामी सँ मिलान करैत अछि ओकर समावेश पाओल जाइछ—

अररिक टूसा सँ बाहर भेलीह सामा हे

सामा जैतीह सासुर किछु गहना चाहियनि हे
हमरा सँ फलाँ भैया चतुर सियार हे
बामे लेल कागज दहिन मसिढानि हे
हमरा सँ ऐहब भौजो चतुर सियान हे
भैया सँ बिगाड़ि कैलनि सइयाँ सँ मिलान हे

कर्मक निर्णय व्यक्ति मात्रक आन्तरिक वस्तु थिक जे अस्तित्वक प्रकाशक तथा दिव्य मानव प्रेमक प्रतिच्छाया स्वरूप थिक। एहि गीत मे नारीक भावुक हृदयक स्नेह, उदारता तथा विश्वासक दिग्दर्शन होइछ—

अयलै कातिक मास माइ हे
सामा लेल अवतार
कानि कानि चिठिया लिखौलनि फलों बहिनि
भेजलनि हजमा केर हाथ
चिठिया दीहै रे भैया
फलाँ-भैया केर हाथ
चिठिया पढ़ैत हौ भैया
घोड़ा पीठिया सवार
टिकुली बेसईह हौ भैया
बेतिया सदरे बजार
टिकुली झलकि गेल भैया
फलौं बहिनिक कपार
सिन्दूरा झलकि गेल हौ भैया
ऐहब भौजोक कपार

सौंदर्य सँ मण्डित किन्तु हृदय सँ हीन नारी जीवन निरर्थक होइछ। भावनाक पवित्रता, तथा आचरणक सरल मृदुलते मे तो नारी जीवनक विशेषता अछि। शैशवक स्नेह, तथा नैहरक प्रति निश्छल प्रेमक भावनाक अपूर्व उमंग एहि गीत मे अछि—

माइ गंगा रे जमुनवा के चिकनि मांटि
माइ आनि दिह कओन भइया गंगा पइसि मांटि
माइ बनाए दिअ कनिया भौजो सामा हे चकेवा
माइ खेले जयति कओन बहिनो चारो पहर राति।
कथि के दिय कथिक सूत बाती
कथि केर तेल जड़ैय सारि राति
माटि केर दीप पटम्बर सूत बाती
नेह के तेल जरैए सारि राति
खेलाय लगलि कओन बहिनो चारो पहर राती
जरे लागल दिप झमकै लागल बाती।

विवेक और सौंदर्यक समिश्रण एहि गीत मे अछि—

अरे भमरा अरे भमरा
हमर भैया फलाँ भैया सूतल की जागल रे भमरा
साठि सहेली डाला नेने ठाढ़ छै रे भमरा
लहंगा पटोर से डाला झाँपल छै रे भमरा
भैया जगावै भौजो नहि जागे रे भमरा
काठ पसीजै भौजो नहि पसीजै रे भमरा

बाल सुलभ कलहक वर्णनक संग पिता द्वारा हस्तक्षेपक वर्णनक मनोरञ्जक उदाहरण एहि गीत मे अछि—

डाला ले बहार भेलि बहिनो फलाँ बहिनो
फलाँ भैया लेलनि डाला छीन सुनू राम सजनी

समुश्रा बइसल श्रदाँ बाबू बरइता चाचा बरइता
श्रहँक पुत्र लेल डाला छीन सुनू राम सजनी
कथि के तोहर डाला गे बेटी
कथिए लगाश्रोल चारु कोन सुन राम सजनी
काँच हीं बाँस केर डलवा हो बाबा
चम्पा-चमेली चारो कोन सुनू राम सजनी
दहु हे पुत्र बहिनिया कँ डलवा
सामा खेले जयति बड़ी दूर सुनू राम सजनी।

श्यामा चकेवाक प्रसंगक वर्णन एहि गीत मे अछि—

समा चकेवा श्रइह हे
कुर खेत मे वैसियह हे
सभ रंग पटिया श्रोछैह हे
श्रोहि पटिया पर के के बैसय
सातो भैया बैसय
एक एक भाय कें कय-कय-पुरी
एक एक भाय कें सात-सात पुरी

निम्नलिखित गीत मे पारिवारिक जीवनक सफल चित्रण सन्निहित श्रछि। स्त्रीक द्वारा श्यामा खेलायब पतिक द्वारा विछियाक चोड़ायब तथा बहिनिक द्वारा श्रोहि चोर कें रेशमक डोर सँ बान्हबाक आग्रह कतेक विलक्षण एवं मार्मिक अछि :—

सामा खेलय गेलिग्रै हो भैया फलाँ भैया केर टोल।
डलवा हेराय गेल हो भैया बिछिया लै गेल चोर।
चोरवा के नाम की हे फलाँ वहिनि कहि दिय बहिनि मोर
एक मुट्ठी खरही हो फलाँ भैया तकर कएलहुँ इजोत।
चिन्हैत चिन्हलौहं हो भैया फलाँ रे बड़ चोर।

धरिह पकड़िह हौ भैया बान्हिह रेशमक डोर।
जूता चढ़ि मारिह हौ भैया नयनमा ढरतैय नोर।
आब जुनि मारहक हौ भैया बहनोइया होइतह हौ तोर।

ननदि-भाउजक स्वाभाविक सम्बन्ध एवं पारस्परिक आचरणक चित्रण निम्नलिखित गीत मे अछि :—

सामा खेलै गेलौंह शाइ के आंगन हे
आहे भाउज लेलनि लुलुआय ननदि कहाँ आयल हे
जुनि लुलुअवियै भाउज हे
आहे जाबै रहतै माय-बापक राज ताबे सामा खेलब हे
एते वचन सुनलनि फलाँ भैया हे
भैया मारलनि बरछी घुमाय बहिनि मोरा पाहुन हे

पुनः —

सामा खेलै गेलौं माइ हे फलाँ भैया केर टोल
बिछिया हेराय गेल डलवा लै गेल चोर
एक मुट्ठी खरही हौ भैया तकरे केलौंह हे इजोत
चिन्हइत चिन्हलहुँ भैया फलाँ भैया बड़ चोर
उनटा बान्ह बान्हियह हौ भैया करेजवा सालै हमार
फूले साटे मारियह हौ भैया नयनमा ढारितै नोर

सासु-ननदिक प्रति स्वाभाविक भावनाक विलक्षण चित्रण निम्नलिखित गीत मे अछि :—

सामा खेले गेलौं भाइ से कोन भाइक टोल
गोखुलक काँट लुककि धएलक सड़िया
छाड़ छाड़ कँटवां लगउलि वड़ हे देरिया
मोर पछुअरवा दरजिया भइया हितवा
नान्हे टोपे सिइह दरजिया मोर चित्र सड़िया

सड़िबा सिग्रउनि बहिनो कीए देब दनमा
चढ़के घोड़ा देबौ काने दुनु सोनमा
अगिया लगएबौ बहिनि काने दुनु सोनमा
जब हम जयवो अपन सासुर
सासु देबो दनमा ननद देवो दछिना

ननदि भाउजक पारस्परिक कलहक संकेत एहू गीत मे अछि—

सामा खेलै गेलिए जे कनिया भौजो के अँगना हे
आहे कनिया भौंजो लेलनि लुलुआइ
छोड़ ननद अँगना हे
एतेक वचन जँ सूनलनि बड़का भैया
आहे मारे लागल बरछी घुमाय बहिन मोरा पाहुन हे
आहे जातक रहतै माय-वापक राज
तातक सामा खेलथि हे।

श्यामाक प्रसंगक वर्णन एहि गीत मे अछि :—

आगे टेहुली आगे टेहुली सामा जाइछ सासुर
किछु गहना चाही गे टेहुली गढ़वाइये देब गे टेहुली
आगे टेहुली आगे टेहुली सामा जाइछ सासुर
किछु पौती चाही गे टेहुली
डोमिनियाँ सँ बनवाइये देब गे टेहुली
सामा जाइछ सासुर सिनूर टिकुली चाही गे टेहुली
सिनुरिया सँ कीनि देब गे टेहुली
आगे टेहुली आगे टेहुली

चुगलाक प्रति तिरस्कार पूर्ण व्यवहारक ई गीत थिक—

चुगका करै चुगली बिलैया करै म्याऊँ
धए लाए चुगला कें फाँसी चढ़ाऊ

जहाँ हमर बाबा वसय तहाँ चुगला चुगली करै
जहाँ हमर भैया वैसय तहाँ चुगला चोरी करै
धए लाए चुगला कें फाँसी चढ़ाऊँ।

निम्नलिखित गीत मे भायक प्रति बहिनिक अनुराग तथा चुगलाक प्रति तिरस्काए चित्रए अछि :—

हमर भइया कोना आवे ?
हाथी पर बैसल हँसैत आवे
पान सँ दाँत रंगइत आवे
रुमाल सँ मुँह पोछइत आवे
कँघी सँ केश झाड़इत आवे
हमर भौजी कोना आवे ?
पालकी मे वैसल हँसइत आवे
सिनूर सँ माँग करइत आवे
अयना सँ मुँह देखइत आवे
चुंगला भँड़आ कोना आवे
गदहा पर बइस कनैत आवे
कोइला सँ दाँत रंगइत आवे
कम्बल सँ मुँह पोछइत आवे
छूरा सँ केश झाड़इत आवे
चुगला वहु कोना आवे
खटुली चढ़ल भड़ुही कनैत आवे
कोइला सँ माँग भरइत आवे
खापैर सँ मुँह फोड़इत आवे ।

पुनः—

धान धान तँ भइया कोठी धान
चुगला कोठी भुस्सा

आरे वृन्दावन जारे वृन्दावन
भइया मुख पान चुँगला मुख कोइला
मटर-मटर-मटर त भइया कोठी मटर
चुँगला कोठी फटर
आरे वृन्दावन जारे वृन्दावन
भइया मुख पान चुगला मुख कोयला
चाउर-चाउर-चाउर त भइया कोठी चाउर
चुगला कोठी छाउर
आरे बृन्दावत जारे बृन्दावन
भइया मुख पान चुगला मुख कोइला
उरीद-उरीद-उरीद त भइथा कोठी उरीद
चुँगला कोठी फुरीद
आरे वृन्दावन जारे वृन्दावन
भइया मुख पान चुगला मुख कोइला

निम्नलिखित गीतक तात्पर्य श्यामवालाक पिताक गृह मे लक्ष्मीक क्रोधवश अन्न-धन-वस्त्रक हीनता सँ अछि :—

बृन्दावन मे आगि लागै
क्यो ने मिझावै हे
हमर भैया फलाँ भैया
दौड़ि दौड़ि मिझावै हे

भायक प्रति बहिनिक उद्‌गारक ई गीत थिक :—

जेहेन नदिया सेमार तेहेन भैया असवार
जेहेन केराक थम्भ तेहेन भइयाक जाँघ
जेहेन धोवियाक पाट तेहेन भइयाक पीठ
जेहेन रेशमक रेश तेहेन भइयाक केश
जेहेन आमक फाँक तेहेन भइयाक आँखि

जेहेन चाननक बीरीछ तेहेन भइया हाथक लाठी
जेहेन जरल जराठी तेहेन चुगला हाथक लाठी

श्यामा-चकेवाक ई अन्तिम गीत थिक जकर सम्बन्ध विसर्जन सँ अछि :—

सामा हे चकेबा हे
कुड़ि खेत मे रहिह हे
ढेपा फोरि-फोरि खैयह हे
ओस पी-पी रहिह हे
हमरा भाइ कें आसिस दीहह हे
अगिला साल फेर अइह हे ।